दो अनमोल ख़ज़ाने

लेखक :

हकीम मो. तारिक महमूद मजज़ूबी चुगताई

(पी.एच. डी, अमरीका, गोल्ड मेडलिस्ट पाकिस्तान)

दो अनमोल ख़ज़ाने

लेखक
हकीम मुहम्मद तारिक़ महमूद
अबक़री मजज़ूबी चुग़ताई
(गोल्ड मेडलिस्ट पाकिस्तान)

प्रकाशक
महमूद एण्ड कम्पनी
२, फ़िरदोस मंजिल, १२, घोघारी मोहल्ला
पहली क्रॉस गली, भेंडी बाज़ार, मुंबई – ३
Tel. : 022-23436897 - 23453714 Mobile : 9821563696
E-mail : mahmoodcopublishers@yahoo.co.in

इन वज़ाइफ़ के कारगर होने की चन्द शराइत यह हैं :

* यक़ीन के साथ अमल करें, शक अमल को ज़ाए कर देता है।
* तवज्जोह के साथ अमल करें, बे-तवज्जोही से पढ़ी जाने वाली दुआऐं हवा में गुम हो जाती हैं।
* रिज़्के हलाल का एहतिमाम करें, हराम गिज़ा अमल के असर को खत्म कर देती है।
* हर अमल अल्लाह की रज़ा के लिए करें, मालिक राज़ी होगा तो काम बनेगा।
* फराइज़ का एहतिमाम करें, जो लोग नमाज़ और दीगर फराइज़ अदा नहीं करते उन के आमाल बे-असर रहते हैं।
* हराम कामों से बचें, वह काम जिन्हें

शरीअत ने हराम क़रार दिया है उन का इरतिकाब रूहानियत को नुक्सान पहुंचाता है, तब भी अमल कारगर नहीं होता।

* अल्फ़ाज़ की तसहीह का एहतिमाम करें, अल्फाज़ ग़लत पढ़ने से मानी बदल जाते हैं।

* तहारत का एहतिमाम करें, खुद भी पाक साफ़ हों, लिबास और जगह भी पाक साफ़ रखें।

* आजिज़ी और आह व ज़ारी के साथ अमल करें।

* अमल ख़ालिस करें परखने वाला दाना है।

* इस्तेहज़ार (ध्यान) के साथ पढ़ें।

दो अनमोल ख़ज़ाने

कारईन ! कुर्आन पाक की ५ आयात और एक दुआ, कुल ६ चीज़ें ऐसे ग़ैबी रूहानी असरात रखती हैं जिन का इज़्हार नीचे लिखे हुए तजुरबात, मुशाहिदात और वाकिआत से ज़ाहिर होता है, इस की इजाज़त आजिज़ को बाज़ अहलुल्लाह से मिली हूई है। बन्दा और उन की तरफ़ से पढ़ने वाले को आम इजाज़त है।

आज के इस मशीनी दौर में जहाँ हर तरफ़ भागम भाग और नफ़्सा नफ़्सी का आलम है, हर शख्स अपने मुआमलात को सुलझाने में कोशाँ व सर गरदाँ है और दूसरी तरफ़ अगर किसी के मुआमलात माली तौर पर सुलझे हुए हों या ज़माने से बक़दरे बेहतर हों तो कोई भी उस नेमत को बरदाश्त नहीं करता। हसद,

कीना, बुग़्ज़ और इनाद हत्ता के जादू के ज़रीए उसे नीचा दिखाने की कोशिश की जाती है। ज़ेरे नज़र ६ अनमोल वज़ाइफ़ यानी ५ आयाते कुर्आनी और एक दुआ का मजमूआ अगर कोई हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ ले तो नीचे लिखे हुए फ़ज़ाइल व फ़वाइद हासिल होंगे।

वाज़ेह रहे कि जितना अदब व एहतेराम और एहतिमाम इस के पढ़ने में होगा और उस के साथ साथ जितनी तवज्जोह और ध्यान से इस को पढ़ा जाएगा उतने ज़ियादा फज़ाईल व फ़वाइद हासिल होंगे क्यों कि अल्लाह तआला बन्दे के गुमान के मुताबिक़ उस से मुआमला करता है। लिहाज़ा जितना कामिल, अकमल और मुकम्मल यक़ीन और गुमान अल्लाह जल्ले शानुहू की ज़ात पर होगा उतने ज़ियादा फ़वाईद व फ़ज़ाईल हासिल होंगे।

पहले खज़ाने के फ़ज़ाईल और फ़वाईद

नीचे लिखी हुई ६ आयतों को पहले दरूद शरीफ़ फिर बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के साथ हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ें, वह आयतें नीचे लिखी हुई हैं।

१) सूरः फ़ातिहा (पारा नंबर १)

२) आयतुल कुर्सी (पारा नंबर ३, सूरः बक़रः आयत २५५ ता २५७)

३) शहिदल्लाहू से अलहिसाब तक (पारा नंबर ३ सूरः आलि इमरान आयत १८ और १९)

४) कुलिल्लाहुम्मा मालिकुल मुल्कि से हिसाब तक (पारा नंबर ३ सूरः आलि इमरान आयत नंबर २६ और २७)

५) लक़द जाअकुम से आख़िर तक (पारा नंबर ११ सूर: तौबा आयत १२८, १२९)

६) दुआए अबू दरदा (रह.) (किताबुल अस्मा वस्सिफात लिल बैहक़ी सफ़्हा नंबर १२५। ब हवाला हयातुस्सहाबा (अरबी) जिल्द ३ सफ़्हा ८९)

(<u>नोट :</u> यह तमाम आयात और दुआ सफ़्हा नंबर ३३ ता ४३ पर लिख दी गई हैं।)

लक़द जाअकुम की फ़ज़ीलत

अल्लामा सख़ावी (रह.) अबू बक्र बिन मुहम्मद (रह.) से नक़ल करते हैं कि मैं हज़रत अबू बक्र बिन मुजाहिद (रह.) के पास था कि इतने में शेख़ुल मशाईख़ हज़रत शिबली (रह.) आए उन को देख कर अबू बक्र बिन मुजाहिद (रह.) खड़े हो गए, उन से मुआनिका किया, उन की पेशानी को बोसा दिया। मैंने उन से अर्ज़ किया कि मेरे सरदार आप शिबली (रह.) के साथ यह मुआमला करते हैं हालांकि आप और सारे उल्माए बग़दाद यह ख़याल करते हैं कि यह पागल हैं। उन्हों ने फ़र्माया कि मैं ने वही किया जो हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को करते देखा। फिर उन्हों ने अपना ख़वाब

सुनाया कि मुझे हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़वाब में ज़ियारत हुई कि हुज़ूर (स.अ.व.) की ख़िदमत में शिबली (रह.) हाज़िर हुए। हुज़ूर (स.अ.व.) खड़े हो गए और उन की पेशानी को बोसा दिया और मेरे पूछने पर आप (स.अ.व.) ने इर्शाद फ़र्माया कि यह हर नमाज़ के बाद लक़द जाअकुम रसूलुम मिन अन्फुसिकुम आख़िर सूरह तक पढ़ता है। एक रिवायत में है कि जब भी फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ता है उस के बाद यह आयते शरीफ़ा लक़द जाअकुम रसूलुम मिन अन्फुसिकुम आख़िर तक पढ़ता है।

अबू बक्र (रह.) कहते हैं कि इस ख़वाब के बाद जब शिबली (रह.) आए तो मैंने उन से पूछा कि नमाज़ के बाद क्या दरूद पढ़ते हो? तो उन्होंने यही बताया। एक और साहब

से इसी नोअ (तरह) का एक क़िस्सा नक़ल किया गया है।

अबुल क़ासिम ख़स्साफ़ (रह.) कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत शिबली (रह.) अबू बक्र बिन मुजाहिद (रह.) की मस्जिद में गए। अबू बक्र (रह.) उन को देख कर खड़े हो गए। अबू बक्र के शागिरदों में इस का चर्चा हुआ। उन्होंने उस्ताद से अर्ज़ किया कि आप की ख़िदमत में वज़ीरे आज़म आए तो उन के लिए तो आप खड़े हुए नहीं, शिबली (रह.) के लिए आप खड़े हो गए। उन्होंने फ़र्माया कि मैं ऐसे शख्स के लिए क्यों न खड़े हों जिस की ताज़ीम हुज़ूरे अक़दस (स.अ.व.) खुद करते हैं उस के बाद उस्ताद ने अपना एक ख़वाब बयान किया और यह कहा कि रात मैं ने हुज़ूरे अक़दस (स.अ.व.) की ख़वाब में ज़ियारत

की थी। हुज़ूर (स.अ.व.) ने ख़वाब में इर्शाद फ़र्माया था कि कल को तेरे पास जन्नती शख़्स आएगा। जब वह आए तो उस का एहतेराम करना। अबू बक्र (रह) कहते हैं कि इस वाकिऐ के दो एक दिन के बाद फिर हुज़ूर (स.अ.व.) की ख़वाब में ज़ियारत हूई। हुज़ूरे अक़दस (स.अ.व.) ने ख़वाब में इर्शाद फर्माया : "ऐ अबू बक्र : अल्लाह तुम्हारा भी ऐसा ही इकराम फ़र्माए जैसा कि तुमने एक जन्नती आदमी का इकराम किया। मैं ने अर्ज़ किया: "या रसूलल्लाह (स.अ.व.)! शिबली (रह) का यह ऐज़ाज़ आप (स.अ.व.) के यहां किस वजह से है? हुज़ूर (स.अ.व.) ने इर्शाद फ़र्माया कि वह पांचों नमाज़ों के बाद यह आयत पढ़ता है। लक़द जाअकुम रसूलुम मिन अनफुसिकुम (अल आया:)

और अस्सी (८०) बरस से उस का यह मामूल है। (बहवाला फज़ाईले दुरूद शरीफ़ ब हवाला कौल बदी)

ऐसे लोग जो रिज़्क की तंगी, परेशानी और बे रोज़गारी का शिकार थे जब उन्होंने ६ चीज़ों का एहतिमाम किया और हर फर्ज़ नमाज़ के बाद कामिल यकीन से पढ़ा तो हैरत अंगेज़ फ्वाईद रूनुमा हुए।

* एक शख़्स लाहौर, शेखू पूरा रोड की एक मिल में काम करते थे, बहुत अच्छे ओहदे पर थे, मिल मालिकान से किसी बात पर अन बन हो गई और उन्हें अपनी मुलाज़मत से हाथ धोना पड़ा। मौसूफ कुछ अर्सा तो जमा पूंजी पर गुज़ारा करते रहे। लेकिन आख़िर कब तक ? सारा सरमाया ख़त्म हो गया, मुआमला उधार पर आ गया लोगों से उधार

ले कर अपना गुज़ारा चलाने लगे। आख़िर कार लोगों ने उधार देना भी बन्द कर दिया उसी दौरान नौकरी के लिए कोशिश भी करते रहे लेकिन हर जगह ना काम। आख़िर कार लाहौर में उन्हें यह चीज़ें पढ़ने को बताई गई मौसूफ चूंकि परेशान थे। उन्होंने एहतिमाम से यह ६ चीज़ें पढ़ना शुरू कर दीं। शाने करीमी ने करम फर्माया और दिन फिर गए। आज वही शख्स फिर से अच्छी ज़िन्दगी और खुशहाल अय्याम बसर कर रहा है।

* एक पूलिस ऑफिसर रिश्वत लेने के जुर्म में मुअत्तल हो गए। मौसूफ़ ने बहाली की बहुत कोशिश की लेकिन बड़े अफ्सर चूंकि अरसे दराज़ से नाराज़ थे इस लिए उस का काम न हुआ। एक साहब के ज़रीए से उस पूलिस ऑफिसर ने मुलाक़ात की। बेचारा

बहुत परेशान और पशेमान था दोस्त व अहबाब साथ छोड़ गए थे। मिज़ाज में सादगी और तवाज़ो आ गई थी। उस से रिज़्के हलाल का वादा ले कर हर फर्ज़ नमाज़ के बाद मज़कूरा ६ चीज़ें पढ़ने को अर्ज़ कीं चन्द महीने बाद मौसूफ मिले। नौकरी बहाल हो गई और वह मुतमइन थे।

* एक जवान बहुत अरसे पहले अमरीका में मुकीम थे। हत्ता कि ग्रीन कार्ड होल्डर थे। कोई ऐसी ग़लती हुई के हुकूमत की तरफ़ से ग्रीन कार्ड ज़ब्त और नौकरी भी ख़त्म कर दी गई। कुछ अरसा तो अमरीका में रहे फिर पाकिस्तान आ गए। मौसूफ़ मरवान के रहने वाले थे चूंकि अमरीका के डॉलर के सामने पाकिस्तानी रूपये की हैसियत नहीं है और उन की नज़र में भी नहीं थी। लिहाज़ा

पाकिस्तान में दो कारोबार किए। लेकिन नाकाफी। हत्ता कि लाखों डूब गए, जब उन से यह ६ चीज़ें पढ़ने को अर्ज़ कीं तो कुछ अर्सा मुतवातिर पढ़ने के बाद मिले और बताने लगे कि अल्लाह तआला ने मेरा यह मसअला हल कर दिया है और मैं मुतमइन हूँ।

* एक साहब ट्रान्सपोरटर थे। तीन वैगनें किराए पर चलाते थे कुदरत खुदा की, पे दर पे दो वेगनों का एक्सीडेन्ट हो गया। एक वेगन घर और नोकरों का ख़रच पूरा करने के लिए ना काफी थी, आख़िर उस एक वेगन को बेच कर दो वेगनों की मरम्मत कराई लेकिन मुआमला रोज़ बरोज़ बोहरान की तरफ़ गामज़न था, हत्ता कि इन दो वेगनों की मरम्मत भी न करा सके और वह अधूरी रह गईं। ट्रान्सपोरटर रोज़ बरोज़ कर्ज़े के बोझ

तले दबता गया, बहुत इधर उधर घूमे लेकिन मर्ज़ बढ़ता गया जूँ जूँ दवा की, आख़िर कार जब उसे यह वज़ीफ़ा यानी ६ चीज़ें आजिज़ ने अर्ज़ कीं और उस ने बाक़ाएदगी से तवज्जोह और धयान से पढ़ना शुरू कीं अल्लाह तआला ने आहिस्ता आहिस्ता परेशानी को ख़त्म करना शुरू कर दिया।

* आजिज़ की एक ऐसे शख़्स से मुलाक़ात हुई जो अर्से दराज़ से बेरोज़गार था ९ बच्चों का बोझ अकेले सर पर था, ग़लती यह हुई कि ग़रीब तो था ही दो बीघे ज़मीन थी उस से कुछ गुज़ारा हो रहा था किसी ने मश्वरा दिया कि उस को बेच कर अच्छा कारोबार कर ले, सूए क़िस्मत उस ने ऐसा कर लिया चूंकि कारोबार का तजुरबा था नहीं उस ने एक पार्टनर तजुरबेकार साथ रखा। लेकिन पार्टनर ने

धोका दिया और यूँ कारोबार फ़ेल हो गया, मौसूफ़ बहुत परेशान थे आजिज़ ने ६ चीज़ें पढ़ने को अर्ज़ कीं मुस्तक़िल और दाइमी पढ़ने को बताईं मौसूफ़ ने उन को बाक़ाइदगी से पढ़ा, उस शख़्स पर जिस अन्दाज़ से करीम का करम हुआ मैं ख़ुद हैरान हुआ। इस बेरोज़गारी के आलम में जहाँ डिगरियों की कोई हैसियत नहीं बल्कि रिश्वत और सिफारिश का बाज़ार गर्म है, ऐसे दौर में जब भी मैंने ऐसे ज़वानों को दो अनमोल ख़ज़ाने पढ़ने को अर्ज़ किए, हैरत अंगेज़ तौर पर ग़ैबी अस्बाब पैदा हुए और शाने करीमी ने करम की इन्तिहा कर दी।

✻ एक जवान कोएटा में मिला, दर्स के बाद उस ने अपनी बिपता सुनाई कहने लगा, "वालिद साहब मुहकमा नहर में चपरासी थे

जो कि गुज़िश्ता दो सालों से रिटाएर्ड हो गए हैं, हम दो भाई और तीन बहनें हैं, सब से बड़ा मैं हूँ, ग़ुरबत के आलम में वालिद साहब ने मुझे आला तालीम दिलवाई मैं एम.एस.सी. फिज़िक्स हूँ, वालिद साहब की नौकरी के ख़त्म होजाने की वजह से घर के हालात बहुत तंग दस्ती का शिकार हैं। मैंने मुलाज़मत की बहुत कोशिश की, एक दो जगह मुलाज़मत भी मिली लेकिन ना क़ाबिले गुज़ारा, छोटे बहन भाई ज़ेरे तालीम हैं, सिर्फ वालिद साहब की पेन्शन घर के खर्च को चलाने के लिए ना काफ़ी हैं।" बन्दे ने अपनी मज़कूरा ६ चीज़ें हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ने को अर्ज़ की और उठते बैठते इन्तिहाई कसरत से अनमोल ख़ज़ाने नंबर २ (जो कि आगे आ रहा है) पढ़ने को अर्ज़ किया, तकरीबन एक

साल के बाद उस नव जवान का ख़त मिला कि एक जगह प्राईवेट अच्छी मुलाज़मत मिल गई है और घर का गुज़ारा अच्छा शुरू हो गया है।

* एक डॉक्टर साहब ने शिकायत की के पहले तो उन्होंने किलिनिक चलाया हालांकि डॉक्टर साहब बहुत अच्छे और समझदार फिज़ीशियन थे, किलिनिक बदला लेकिन हर जगह ना कामी हुई, बन्दे ने ६ चीज़ें पढ़ने को अर्ज़ कीं और अनमोल खज़ाना नंबर २ हर वक़्त पढ़ने को बताया, अल्लाह तआला ने बहुत फज़्ल किया।

* एक साहब ने अपना ख़वाब बयान किया कि मैं ने ख़वाब में एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग की ज़ियारत की है जिस में उन्हों ने एक दुरवेश के कमालात की तस्दीक़ की और उन ६ चीज़ों को

इन्तिहाई तवज्जोह से पढ़ने की ताकीद की और फर्माया यह ६ समुन्दर हैं जितना पढ़ते जाओगे कमालात के मोती पाओगे, इन ६ समुन्दरों को पढ़ने के बाद कभी बे यक़ीनी का शिकार न होना क्योंकि कोई शख़्स भी अगर कमालात और मरातिब के दरजात को पहुंचना चाहता है तो इन ६ चीज़ों को कभी न छोडे ।

* एक साहब ने ख़वाब देखा कि ६ चश्मे हैं और हर चश्मे पर यही ६ वज़ाईफ़ लिखे हुए हैं और हर वज़ीफ़े से पानी निकल कर आगे एक नहर बन रही है, मैं इस ख़वाब में अपने को बहुत बीमार और अलील महसूस कर रहा हूँ। ग़ैब से आवाज़ आई कि इन चश्मों का पानी पी लो, वह मिलेगा कि तुम गुमान नहीं कर सकते ! वह साहब कहने लगे कि मैं ने आलमे ख़वाब में उन चश्मों का पानी पिया । इतना

मीठा और लज़ीज़ पानी कि मैं बयान नहीं कर सकता। जब मेरी आंख खुली तो वह मिठास मेरे मुँह के ज़ाएके में मौजूद थी।

* एक ख़ातून ने अपना ख़वाब लिखा कि मैं ११ साल से वज़ीफा पढ़ रही हूँ, मैं अब तक इस ज़िम्न में कई ख़वाब देख चुकी हूँ इस ख़ातून का एक ख़वाब नीचे लिखा है।

कहने लगीं के एक बहुत बड़ा महल है, सफेद बिलकुल सफेद लेकिन उस का कहीं से दरवाज़ा नहीं है, रास्ता ढूंडते ढूंडते आखिर कार मैं थक गई। यका यक दिल में ख़याल आया कि मैं हर फर्ज़ नमाज़ के बाद ६ चीज़ें पढ़ती हूं क्यों न इस मुश्किल में वह पढ़ लूं, मैं ने वह ६ चीज़ें पढ़ीं। उस के पढ़ते ही महल में ६ रास्ते बन गए और हर दरवाज़े के ऊपर कुछ लोग इस्तिक़बाल के लिए खड़े

थे जो दरवाज़ा मेरे करीब था मैं उस दरवाज़े से गुज़री, मैं ने वहां पूछा यह क्या है? तो बताया कि यह उन कलिमात का कमाल है जो तू हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ती है और उस के बाद मेरी आंख खुल गई।

✻ गुजरात के एक साहब ने अपना ज़ाती किस्सा बयान किया कि मैं ने एक जगह ग़ैरों में अपनी बेटी की शादी की, निबाह न हो सका और डेढ़ साल के बाद तलाक़ हो गई वह लोग मेरे दुश्मन बन गए कई दफ़ा क़ातिलाना हमले किए। दर असल मुझे और मेरी तलाक़ शुदा बेटी को क़त्ल करना चाहते थे। मैं ने आप के बताने पर यह चीज़ें शुरू कर दीं उस दिन से आज तक उन का हर वार ख़ता गया बल्कि उन पर उल्टा पड़ा। उन का जानी व माली बहुत नुक्सान हुआ हत्ता कि परेशान

और पशेमान हो कर उन्हों ने मुझ से दुश्मनी खुद बखुद ख़त्म कर ली।

* एक साहब ने अपना किस्सा बयान किया कि पहले मैं गरीब था अल्लाह तआला ने मेरे कारोबार में बरकत अता की। मेरे रिश्तेदार और दोस्त खुद बखुद मेरे दुश्मन बन गए, एक जगह एक नेक सालेह आमिल के पास बैठा था, उन्हों ने अपने हिसाब के मुताबिक़ बताया कि जादू और तावीज़ किए गए हैं, उन्हों ने कुछ तावीज़ दे दिए और पढ़ने को बताया मैं ने वह चीज़ें पढ़ना शुरू कर दीं कुछ अफ़ाक़ा हुआ, लेकिन मुस्तक़िल फाइदा न हुआ, उस के बाद मैं ने एक और आमिल की तरफ़ रुजू किया लेकिन मुस्तक़िल फाइदा न हुआ, हत्ता कि हासिदों के तावीज़ और शर की वजह से मेरी याद दाश्त ख़त्म हो गई,

कारोबारी नुक़्सान होने लगा घर में बद अमनी, बद सुकूनी और बीमारी ने डेरे डाल लिए, आप के बताने पर जब से मैं ने यह पढ़ना शुरू किया है। अल्हमदुलिल्लाह ! अल्लाह तआला के फ़ज़ल व एहसान की बरकत से मुझ से तमाम असरात खत्म होगए।

* कारईने किराम ! हर क़िस्म के जादू, तावीज़ और सहर के लिए यह वज़ीफ़ा अक्सीर कामिल का दरजा रखता है, यक़ीन जानिए मेरे १४ साला तजुरबे से इस वज़ीफ़े के बारे में सैंकड़ों नहीं हज़ारों मरीज़ों के ऐसे मसाइल हल हुए जिन में बड़े बड़े आमिलों ने और साहिरों ने उन की ज़िन्दगी अजीरन कर दी थी।

कई लोगों ने अपने तजुरबात बयान किए

कि उन्हें नज़रे बद लगती है और उस नज़रे बद की वजह से वह तरह तरह की बिमारियों, अवारिज़ात, नुक्सान और तक्लीफों में मुबतला हो जाते हैं। जब से वज़ीफ़ा पढ़ना शुरू किया है नज़रे बद लगना ख़त्म हो गई, कई बच्चों पे नज़रे बद लगने की वजह से जब इस वज़ीफ़े को दम किया गया तो वह तन्दुरुस्त हो गए, एफ तालिबे इल्म ने शिकायत की के उसे नज़रे बद बहुत जल्द लग जाती है, उस की वजह से तालीमी बेहरान में मुबतला हूँ, जब उसे यह वज़ीफ़ा पढ़ने को अर्ज़ किया गया तो उस का देरीना मसअला हल हो गया।

* एक साहब ने अपना वाकिआ (किस्सा) बयान किया कि मुझे दुश्मनी की वजह से सिन्ध के मुज़ाफात में दोस्त बन कर ऐसा

खाना खिलाया जिस में हलाक करने वाला ज़हर था, जिस का एक लुक़्मा अजल का पैगाम था, मैं ने वह खाना खाया और गाड़ी में बैठ कर सफ़र शुरू किया, अभी आध घंटा भी सफ़र नहीं किया था कि सर चकराने लगा और मतली शुरू हो गई मैं ने एक आबादी में गाड़ी खड़ी की, मुझे बहुत ज़्यादा कए (उल्टी) आई और तमाम ज़हरीला खाना निकल पड़ा। साथ ही एक कम्पाऊन्डर नुमा डॉक्टर जो पुराना तजुरबेकार था देख कर कहने लगा कि साहब जी आप को ज़हर दिया गया है और यह इतना मुहलिक ज़हर है कि मैं ने आज तक किसी आदमी को बचते हुए नहीं देखा, अल गर्ज़ मुझे एक दिन तकलीफ़ रही मामूली सी दवा इस्तेमाल करने के बाद मैं बिलकुल तन्दुरुस्त हो गया और मेरा यकीने कामिल है

कि सब कुछ हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद इन ६ चीज़ों के पढ़ने की बरकात की वजह से हुआ।

* एक मरीज़ा ख़ातून हाज़िर हुईं मौसूफा रोने लगीं और बताया कि उस का खाविन्द उसे चाहता नहीं, हर वक़्त उस से लड़ता रहता है उस के दूसरी औरतों से ना-जाएज़ तअल्लुक़ात हैं, बहुत तावीज़ गन्डे इस्तेमाल कर चुकी थीं आजिज़ ने यही ६ चीज़ें पढ़ने को अर्ज़ कीं और साथ अनमोल ख़ज़ाना नंबर २ का वज़ीफ़ा हर वक़्त उठते बैठते पढ़ने को कसरत से अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला ने अपनी शाने करीमी से उस के मसाएल हल कर दिए और उस का घर सुकून का गहवारा बन गया।

* एक साहब की शादी को २८ दिन हुए बहुत नेक सालेह आदमी थे। इस बात पर

परेशान थे कि २ हफ्ते तो मियाँ बीवी के तअल्लुकात खुश्गवार रहे लेकिन तीसरे हफ़्ते ना चाक़ी और रन्जिश पैदा हो गई, हालांकि बज़ाहिर उस का कोई ठोस सबब नज़र नहीं आ रहा था, वह साहब बहुत परेशान थे, बीवी रूठ कर मैके चली गई थी आजिज़ ने उन्हें दोनों वज़ाईफ पढ़ने को अर्ज़ किए, अल्लाह तआला ने अपने नाम की बरकत से उन का मसअला हल कर दिया। मैं ने इन ६ चीज़ों को और ख़ज़ाना नंबर २ को ऐसी ला-इलाज बीमारियों में आज़माया कि अक़्ल दंग रह गई, ऐसे मरीज़ जो मायूस और ला इलाज हो चुके थे जब उन्हों ने इस वज़ीफ़े को तवज्जोह और ध्यान से पढ़ा तो अल्लाह तआला ने खज़ानए ग़ैब से शिफ़ा अता फ़र्माई कि मरीज़ खुद हैरान रह गए।

* एक मरीज़ लाहौर केन्सर हस्पताल से हड्डीयों के गूदे के कॅन्सर का इलाज करा रहा था लेकिन अफ़ाक़ा नहीं हो रहा था आजिज़ ने उन्हें इलाज बर क़रार रखने और साथ ही यह दो वज़ाईफ पढ़ने का मश्वरा दिया, मर्ज़ ला इलाज था लेकिन बा इलाज हो गया हत्ता कि कुछ ही अर्से में शिफ़ायाब हो गया।

* इसी तरह एक और मरीज़ जिस की याददाश्त बिलकुल ख़त्म हो चुकी थी और डॉक्टरों ने उसे शीज़ो फ़रेनिया जैसा मुहलिक मर्ज़ बताया था लेकिन इसे पढ़ने की बरकत से अल्लाह तआला ने उसे शिफा अता फर्माई।

* एक साहब ने जो कि बहुत बड़े ज़मीन्दार थे, फसल की तबाही और कीड़ों की यलग़ार

का मुआमला बयान किया, आजिज़ ने दवाओं के इस्प्रे के साथ साथ दो इस्प्रे ऐसे पानी के करने के बारे में मश्वरा दिया जिन पर यह ६ चीज़ें चालीस चालीस बार और खज़ाना नंबर २ भी चालीस बार दम की गई हों, मौसूफ़ ने ऐसा ही किया, बीमारी के कन्ट्रोल में बहुत कामियाबी हुई फसल भी हैरान कुन, हत्ता कि उस ने अपने एक फार्म में दवाओं की बजाए सिर्फ उस वज़ीफ़े का इस्प्रे शुरु कर दिया, यानी पानी पर दम कर के उसी इस्प्रे को शुरू कर दिया, हर हफ़्ते इस का इस्प्रे किया, वाकई रिकार्ड फसल हुई और लोग हैरान हुए लेकिन दोस्तो ! मुआमला यक़ीन का है, जितना यक़ीन उतना नफ़ा !!!

अल गर्ज़ कारईन किराम (पढ़ने वालों) ! जितने भी फवाईद बयान किए हैं, यह इन १४

साला तजुरबात का निचोड़ हैं जो आजिज़ ने अपने पढ़ने के साथ साथ दूसरों को भी पढ़ने के लिए अर्ज़ किए, लोगों के तजुरबात व मुशाहिदात तो बहुत हैं, इन चीज़ों की बरकात, समरात ख़त्म होने के नहीं। आजिज़ के पास इतने वाकेआत हैं कि अलाहिदा मुकम्मल किताब बन सकती है। यहां तो मुख़तसरन चन्द वाकेआत तहरीर किए हैं।

वज़ाईफ यह हैं

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ○

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ﴿۱﴾ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ﴿۲﴾ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ﴿۳﴾ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ﴿۴﴾ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿۵﴾ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ﴿۷﴾

اَللّٰهُ لَآ اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّـوْمُ ۚ لَا
تَاْخُذُهٗ سِـنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَـهٗ مَـا فِی
السَّـمٰـوٰتِ وَمَـا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا
الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ
مَـا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا
یُحِیْـطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَـا
شَـآءَ ۚ وَسِـعَ كُرْسِـیُّهُ السَّـمٰـوٰتِ
وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا یَـئُوْدُهٗ حِـفْـظُـهُـمَـا ۚ
وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ﴿۲۵۵﴾ اَلْبَقَرَة ۲

لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ

مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ

وَيُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ

الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللّٰهُ

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ

اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى

النُّوْرِ ۗ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ

الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ

اِلَى الظُّلُمٰتِ ۗ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ

هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَۙ

وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًۢا

بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ

الْحَكِيْمُ ؕ﴿۱۸﴾ اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ

الْاِسْلَامُ قف وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ

اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا

جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ

يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ

الْحِسَابِ ﴿۱۹﴾

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ

مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ

تَشَآءُ ز وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ

تَشَآءُ ط بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ

شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۲۶﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ

وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ الْحَيَّ

مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ

الْحَيِّ ز وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿۲۷﴾

اٰلِ عِمْرٰن ۳

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾ اَلتَّوْبَة ٩

अऊ़ज़ु बिल्लाहिमिनश्शैतानिर्रजीम
बिस्मिल्लाहिर्रह़्मानिर्रह़ीम।

अल्ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन। अर्रह़मानिर्रह़ीम। मालिकि यौमिद्दीन। इय्याक नअ़बुदू व इय्याक नस्तई़न। इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीम। सिरातल्लज़ीन अनअ़मत अ़लैहिम ग़ैरिल मग़ज़ूबि अ़लैहिम वलज़्ज़ाल्लीन।

अल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अल हय्युल क़य्यूम। लातअ ख़ुज़ुहू सिनतुन वला नौम। लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िलअर्ज़। मन ज़ल्लज़ी यशफ़अु इन्दहू इल्ला बिइज़्निह। यअलमु मा बैन अैदीहिम वमा ख़लफ़हुम वला यूहीतून बिशैइम मिन इल्मिही इल्ला बिमा शाअ वसिअ कुरसिय्युहुस्समावाति वल अर्ज़। वला यअूदुहू हिफ्ज़ुहुमा वहुवल अलीय्युल अज़ीम।

(अल बक़र: २)

ला इकराह फ़िद्दीन, क़द तबय्यनर्रुश्दु मिनल ग़य्यि। फमंयकफुर बित्तागूति व युअमिम बिल्लाहि फ़क़दिस्तमसक बिल अुरवतिल वुस्क़ा लन फ़िसाम लहा। वल्लाहु समीअुन अलीम। अल्लाहु वलीय्युल्लज़ीन आमनू युख़रिजुहुम मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि। वल्लज़ीन कफ़रू औलियाउ हुमुत्तागूतु। युख़रिजूनहुम मिनन्नूरि

इलज़्ज़ुलुमाति। ऊलाईक असहाबुन्नारि हुम फ़ीहा ख़ालिदून। (अल बक़र : २)

शहिदल्लाहु अन्नहु ला इलाह इल्ला हुव वल मलाइकतु व उलुल इल्मि क़ाइमम बिल क़िस्ति ला इलाह इल्ला हुवल अज़ीज़ुल हकीम। इन्नद्दीन इन्दल्लाहिल इस्लामु व मख़्तलफ़ल लज़ीन ऊतुल किताब इल्ला मिम बअ़दि मा जाअहुमुल इल्मु बग़यम बैनहुम। व मंयक्फ़ुर बिआयातिल्लाहि फइन्नल्लाह सरीउ़ल हिसाब। (आ़लि इमरान ३)

क़ुलिल्लाहुम्म मालिकल मुल्कि तु-तिल मुल्क मन तशाअु वतनज़िउ़ल मुल्क मिम्मन तशाअु व तुइज़्ज़ु मन तशाअु व तुज़िल्लु मन तशाअु। बियदिकल ख़ैरु। इन्नक अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। तूलिजुल लैल फिन्नहारि व तूलिजुन्नहार फिल लैलि व

तुख़रिजुल हय्य मिनल मय्यिति व तुख़रिजुल मय्यित मिनल हय्यि। व तरज़ुक़ुमन तशाअु बिग़ैरि हिसाबि। (आलि इमरान ३)

लक़द जा अकुम रसूलुम मिन अन्फ़ुसिकुम अज़ीज़ुन अ़लैहि मा अ़नित्तुम ह़रीसुन अ़लैकुम बिलमुमिनीन रऊफ़ुर रह़ीम। फ़इन तवल्लौ फ़क़ुल हस्बियल्लाहू ला इलाह इल्ला हुव। अ़लैहि तवक्कलतु व हुव रब्बुल अ़र्शिल अ़ज़ीम। (अत्तौबा ९)

मुसीबतों से नजात ह़ासिल करने का नबवी नुस्ख़ा

" اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، عَلَيْكَ
تَوَكَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ، مَا
شَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَلَا
حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ،
اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ، وَاَنَّ
اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا، اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ
اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَآبَّةٍ
اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ "

अल्लाहुम्म अन्त रब्बी ला इलाह इल्ला अन्त, अ़लैक तवक्कलतु व अन्त रब्बुल अ़र्शिल अ़जीम, माशाअल्लाहु कान वमा लम यशाअ लम यकुन वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्ला हिल अ़लिय्यिल अ़ज़ीमि, अअ़लमु अन्नल्लाह अ़ला कुल्ली शैइन क़दीर, व अन्नल्लाह क़द अहात बिकुल्लि शैईन इल्मा, अल्लाहुम्म इन्नी अअूज़ूबिक मिन शर्रि नफ़्सी व मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन अन्त आख़िज़ुम बिनासियतिहा इन्न रब्बि अ़ला सिरातिम मुस्तक़ीम''

अनमोल ख़ज़ाना नंबर (२)

يَا لَطِيفًا بِخَلْقِهٖ يَا عَلِيمًا بِخَلْقِهٖ يَا خَبِيرًا بِخَلْقِهٖ
اُلْطُفْ بِيْ يَا لَطِيفُ يَا عَلِيمُ يَا خَبِيرُ ط

या लतीफ़म बिख़लक़िही या अ़लीमम बिख़लक़िही या ख़बीरम बिख़लक़िही उलतुफ बी या लतीफु या अ़लीमु या ख़बीरु।

क़ारईन किराम! यह एक वज़ीफ़ा है जिसे उठते बैठते चलते फिरते बा-वुज़ू पढ़ना चाहिए लेकिन बे-वुज़ू भी पढ़ा जा सकता है, इस की तस्दीक़ के लिए नीचे लिखा हुआ वाक़ेआ (किस्सा) पढ़ें:

* एक बुज़ुर्ग फ़र्माते हैं कि मुझ पर एक बार कब्ज़ (दिल की तंगी) और खौफ़ का शदीद ग़लबा हुआ, मैं परेशान ह़ाल हो कर बग़ैर

सवारी और तोशे के मक्का मुकर्रमा को चल दिया, तीन दिन तक इसी तरह बग़ैर खाए पिए चलता रहा, चौथे दिन मुझे प्यास की शिद्दत से अपनी हलाकत का अन्देशा हो गया और जंगल में कहीं साया दार दरख़्त का भी पता नहीं था कि उस के साए में ही बैठ जाता, मैंने अपने आप को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया और क़िबले की तरफ़ मुंह कर के बैठ गया और मुझे नीन्द आ गई तो मैं ने ख़वाब में एक शख़्स को देखा कि मेरी तरफ़ हाथ बढ़ा कर कहने लगा : लाओ हाथ बढ़ाओ : मैं ने हाथ बढ़ाया उन्हों ने मुझ से मुसाफ़्हा किया और फर्माया कि "खुशखबरी देता हूँ कि तुम सहीह सालिम हज करोगे और क़बरे अतहर कि ज़ियारत भी करोगे" मैं ने कहा "अल्लाह आप पर रहम करे आप कौन

हैं''? फ़र्माया ''मैं खिज़र (अलै.) हूँ ''
अर्ज़ किया कि मेरे लिए दुआ कीजीए।
फ़र्माया यह लफ़्ज़ तीन मर्तबा कहो

يَالَطِيفًا بِخَلْقِهٖ يَا عَلِيمًا بِخَلْقِهٖ يَا خَبِيرًا بِخَلْقِهٖ

اُلْطُفْ بِيْ يَا لَطِيفُ يَا عَلِيمُ يَا خَبِيرُ ط

या लतीफ़म बिखलक़िही या अ़लीमम
बिख़लक़िही या खबीरम बिख़लक़िही
उलतुफ बी या लतीफु या अलीमु या
खबीरु।

"'ऐ वह पाक ज़ात जो अपनी मख़्लूक़ पर
महरबान है अपनी मख़्लूक़ के हाल को
जानता है, उन की ज़रूरियात से बाख़बर है,
तू मुझ पर लुत्फ़ व महरबानी फ़र्मा। ऐ
लतीफ़! ऐ अ़लीम ! ऐ ख़बीर !'' फिर

फ़र्माया कि यह एक तोहफ़ा है जो हमेशा काम आने वाला है। जब तुझे कोई तंगी पेश आए या कोई आफ़त नाज़िल हो तो इन को पढ़ लिया करो तो तंगी रफ़ा हो जाएगी और आफ़त से ख़ुलासी होगी, यह कह कर वह गाएब हो गए मुझे एक शख़्स ने "या शेख या शेख" कह कर आवाज़ दी, मैं उस की आवाज़ से नीन्द से जागा तो वह शख़्स ऊंटनी पर सवार था। मुझ से पूछने लगा कि ऐसी सूरत और हुलिये का नव जवान तो तुम ने नहीं देखा! कहने लगा हमारा एक नव जवान सात दिन हो गए घर से चला गया, हमें यह खबर मिली कि वह हज को जा रहा है। फिर उस ने मुझ से पूछा कि तुम कहाँ का इरादा कर रहे हो? मैं ने कहा जहाँ अल्लाह ले जाए। उस ने ऊंटनी बैठाई और उस से उतर कर एक

तोशादान में से दो सफेद रोटियां जिन के दर्मियान हलवा था निकालीं और ऊंट पर से पानी का मश्कीज़ा उतारा और मुझे दिया मैं ने पानी पिया और एक रोटी खाई वही मुझे काफी हो गई। फिर उस ने मुझे अपने पीछे ऊंट पर सवार कर लिया। हम दो रात और एक दिन चले, तो क़ाफिला हमें मिल गया, वहाँ उस ने क़ाफिले वालों से उस नव जवान का हाल दरयाफ़्त किया, तो मालूम हुआ कि वह क़ाफिले में है। वह मुझे वहाँ छोड़ कर उस की तलाश में गया थोड़ी देर के बाद जवान को साथ लिए हुए मेरे पास आया और कहने लगा कि बेटा ! उस शख़्स की बरकत से अल्लाह जल्ले शानुहू ने तेरी तलाश मुझ पर आसान कर दी, मैं उन दोनों को रुख़्सत कर के काफिले के साथ चल दिया, फिर मुझे वह

आदमी मिला और मुझे एक लिपटा हुआ कागज़ दिया और मेरे हाथ चूम कर चला गया। मैं ने उस को देखा तो उस में ५ अशरफियाँ थीं, मैं ने उस में से ऊंट के लिए किराया अदा किया और उसी से खाने पीने का इन्तिज़ाम किया और हज किया और उस के बाद मदीना तय्यिबा गया, मैं ने हुज़ूरे अक़दस (स.अ.व.) के रौज़े अतहर की ज़ियारत की, उस के बाद हज़रत इबराहीम ख़लीलुल्लाह की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत की और जब कभी कोई तंगी या आफ़त पेश आई तो हज़रत खिज़्र की बताई हुई दुआ पढ़ी, उन की फज़ीलत और उन के एहसान का मोअ़तरिफ हूं और इस नेमत पर अल्लाह पाक का शुक्र गुज़ार हूँ। (ब हवाला रौज़ुर्रयाजीन)

ऐसे लोग जो मुसलसल परेशानियों का शिकार रहे, हर तरफ से मसाएल ने उन को घेर रखा था, क़दम क़दम पर ना कामी उन का मुकद्दर बन चुकी थी, जब उन्हों ने अपनी परेशानियों और मसाइल के हल के लिए इस वज़ीफ़े को सुबह व शाम तीन ३ तस्बीह और उठते बैठते इन्तिहाई कसरत से पढ़ा तो हैरत अंगेज़ तब्दीली रूनुमा हुई।

दो अनमोल ख़ज़ाने पढ़ने के बाद पढ़ने वालों के हैरत अंगेज़ मुशाहिदात

दो अनमोल खज़ाने की मकबूलियत पूरे आलम में फैल गई है कई लोगों ने इस को बज़ाते खुद छपवा कर तक़्सीम किया और ना मालूम कितने हज़ार बल्कि स से भी ज़्यादा

लोगों ने इस्तेफ़ादा किया और कर रहे हैं और अपने मसाएल और उलझनें अल्लाह तआला के नाम की बरकत से हल करा रहे हैं। तो कारईन के लिए चन्द ताज़ा तरीन मौसूल होने वाली तस्दीक़ात और मुशाहेदात ईमान और अमल में इज़ाफ़े का बाइस बनेंगी।

* आरमी के एक हाज़िर डयूटी करनल बड़ी मुहब्बत से मिले, तआरुफ़ के बाद कहने लगे कि मुझे कहीं से दो अनमोल खज़ाने का किताबचा मिला, सरसरी तौर पर मैं ने पढ़ा, पढ़ने के बाद महसूस किया कि यह कोई हैरत अंगेज़ चीज़ है, उस के बाद मैं ने तफ़्सील से पढ़ा और फिर अनमोल खज़ाना नंबर १, हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ना शुरू कर दिया और अनमोल खज़ाना नंबर २ हर वक़्त उठते बैठते निहायत कसरत से पढ़ना शुरू कर दिया

मैंने महसूस किया कि मेरे सालहा साल से इकट्ठे हुए काम खुद बखुद बन्ना शुरू हो गए, मुश्किलात हल होना शुरू हो गई, मेरी एक कार थी अर्से से फरोख़्त नहीं हो रही थी, उस के गाहक मिलना शुरू हुए हत्ता कि वह फरोख़्त हो गई, मेरे बेटे को कॉलेज जाने के लिए मोटर सायकल की ज़रूरत थी जिसे मुनासिब कीमत पर सेकंड हैंड मोटर सायकल ख़रीदना चाहता था, मुझे मेरी हस्बे इस्तिताअत बेहतरीन मोटर सायकल मिल गई, फिर मैं ने दो अनमोल खज़ाने मस्जिद अल फलाह बिल्डींग माल रोड लाहौर से ले कर आरमी के दीगर अफ़सरों को देना शुरू कर दिया, जो भी एक दफ़ा पढ़ता वह उस का गरवीदा हो जाता और अब तो सूरते हाल यह है कि मैं ने बे शुमार किताबचे लेकर आरमी

अफ़सरान को पहुंचाए हैं और बे शुमार लोगों के मसाइल, मुश्किलात और परेशानियाँ हल होते हुए मैं ने देखे हैं और उन लोगें ने खुद भी बताए बल्कि अब तो सूरते हाल यह है कि बाज़ लोग इसरार करते हैं कि दो अनमाले खज़ाने और लाकर दें जो पहले आप ने लाकर दिए थे, वह या तो उन का दोस्त ले गया या उन की बीवी ने किसी मुश्किल ज़दा ख़ातून को दे दिया और यूँ लोगों की मुश्किलात हल होती चली गईं, करनल साहब मज़ीद बताने लगे कि मैं तो हैरान हूँ कि लोग बा वजूद परेशानी और मुश्किल के इतने अज़ीम वज़ीफ़े को क्यों भूले हुए हैं, आख़िर वह उठते बैठते चलते फिरते अनमोल खज़ाना नंबर २ क्यों नहीं पढ़ते, हालांकि यह मेरा और मुझ जैसे बेशुमार लोगों का तजुरबा

है कि जिस जिस ने अनमोल ख़ज़ाना नंबर २, उठते बैठते चलते फिरते, निहायत कसरत से पढ़ा वह मकसद में कामियाब हुआ। करनल साहब ने अपने मुशाहेदात बयान करते हुए एक ख़ास बात जो बताई वह यह कि जिस शख़्स ने इस वज़ीफ़े को जितना ध्यान एतिमाद और तवज्जोह से पढ़ा, उस शख़्स को उतना ही फ़ाएदा हुआ क्योंकिइस फ़ाएदे का तअल्लुक़, एतिमादी से है और कामिल यक़ीन से है अगर कोई शख़्स इस वज़ीफ़े को बेएतिमादी और बे यकीनी से पढ़ता है तो वह बावजूद पढ़ने के भी, नफ़ा नहीं पा सकेगा, इस लिए मेरी तमाम पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि इस वज़ीफ़े को निहायते एतिमाद और ध्यान से पढ़ें, ऐसा न हो कि इस वज़ीफ़े को पढ़ते

हुए, ध्यान किसी और वज़ीफ़े की तरफ़ हो या जिस से जो वज़ीफ़ा सुना वही पढ़ना शुरू कर दिया और हर रोज़ नया वज़ीफ़ा या एक ही वक्त में कई वज़ीफ़े, हालांकि दो अनमोल खज़ाने से मुकम्मल नफा लेने का वाहिद तरीका यही है कि खज़ाना नंबर १, हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ा जाए और खज़ाना नंबर २ उठते बैठते, चलते फिरते, ज़्यादा से ज़्यादा और कसरत से पढ़ा जाए, करनल साहब कहने लगे कि मैं ने जब इस को ध्यान, तवज्जोह और यकसू हो कर पढ़ा, मैं ने दुनिया में जन्नत को देख लिया।

* मेरे एक मिलने वाले क़ारी साहब एक दफ़ा दौराने गुफ़्तगू बताने लगे कि मेरी बच्ची को तकलीफ़ थी, मैं एक आमिल के पास उसे ले गया, उस ने तावीज़ के साथ यह दो

अनमोल खज़ाने भी दिए मैं हैरान हुआ, दो अनमोल खज़ाने भी उस ने छपवाए हुए थे मैं ने उस आमिल से पूछा कि आप हकीम साहब को जान्ते हैं ? वह आमिल कहने लगा कि दर असल उन के शहर में मेरा भाई गया था वह लाया तो मैं ने पढ़ा और अपने मरीज़ों को बताना शुरू कर दिया, मैं ने महसूस किया कि मरीज़ों को बहुत फाएदा हो रहा है, आखिर मैंने खुद छपवा कर लोगों को देना शुरू कर दिया।

मैं जब उस आमिल से खुद जा कर मिला, तो उस आमिल ने बताया कि दो अनमोल खज़ाने अब तक ६ एडीशन, जिस में हर एडीशन २०००, २५०० से कम न था, छपवा कर लोगों में बांट चुका हूँ, उस आमिल ने मेरे सवाल करने पर बताया कि मैं उस के असरात और फ्वाईद का बहुत ही

ज़्यादा मुअतरिफ़ हूं क्यों कि मैं जिन लोगों को तावीज़ देता हूँ तो उन के साथ यह किताबचा भी दे देता हूं और उन को साथ ही पढ़ने की ताकीद भी करता हूँ, उस की वजह से मरीज़ बहुत जल्द सिहतयाब और मुश्किलात बहुत जल्द हल हो जाती हैं, उस आमिल ने बताया कि शरीफ मेडिकल सिटी हस्पताल (नवाज़ शरीफ का हस्पताल) में अब तक (१००) से ज़्यादा किताबचे गए हैं, वहाँ मरीज़ों ने पढ़े और सिहत याब हुए, ऐसे लोग जो बैरूने मुल्क जाना चाहते थे, लेकिन उन के लिए मुश्किलात और मसाएल थे, कदम कदम पर रुकावटें थीं जब उन्हों ने अनमोल खज़ाना नंबर १, हर फर्ज़ नमाज़ के बाद और नंबर २ उठते बैठते निहायत कसरत से पढ़ा तो उन की मुश्किलात हल हो गईं,

बैरूने मुल्क का सफर उन के लिए निहायत आसान हो गया और वह अपनी मन्ज़िल तक पहुँच गए।

* ऐसे तालिबे इल्म जो अपने इम्तेहान में नाकामी का शिकवा ले कर आए उन के वालिदैन तालीमी बे तवज्जोही का शिकवा करते थे और तालीमी ना कामी उनका मुकद्दर बन चुकी थी, उन्हों ने जब दो अनमोल खज़ाने पढ़े, तो तालीमी मेयार बेहतर से बेहतर होता गया और वह कामियाबी के ज़ीने तए करते गए।

* मेरे तजुरबे में ऐसे घराने हैं जो अपनी बच्चियों के रिश्ते के बारे में बहुत ही ज़्यादा परेशान थे, मैं ने उन्हें दो अनमोल खज़ाने पढ़ने को दिए, अल्लाह तआला ने अपने नाम की बरकत से उन कि मुश्किलात को

आसान किया और मुनासिब रिश्ते खज़ानए ग़ैब से अता किए।

* मेरे तजुरबे में ऐसे लोग भी हैं जो अपने कारोबारी सिलसिले में अर्से दराज़ से परेशान थे और रोज़ बरोज़ उन की परेशानी बढ़ रही थी, मसाएल मज़ीद उलझ रहे थे, जब उन्हों ने दो अनमोल खज़ाने तवज्जोह, ध्यान और ऐतिमाद से पढ़े, उन के मसाएल हल होना शुरू हो गए और मुश्किलात में कमी वाके हुई हत्ता कि उन की तमाम परेशानियाँ हल हो गईं, सरगोधा में एक शख़्स मिले, कहने लगे मुझ पर जिन्नात का असर था, मैं ने आप से टेलिफोन पर मश्वरा किया, आपने दो अनमोल खज़ाने पढ़ने को बताए थे मैं ने पढ़ने शुरू कर दिए, अब सूरते हाल यह है, पहले जिन्नात मेरे सामने आते थे तन्दुरुस्त और

भागते दौड़ते हुए, अब जब भी मेरे सामने आते हैं लूले लंगढ़े और अपाहिज आते हैं, मैं ने उन से अर्ज़ किया कि लगता यह है कि आप उसे थोड़ी मिकदार में पढ़ रहे हैं। मैं ने उन्हें दो अनमोल खज़ाने एक खास तरकीब से पढ़ने को अर्ज़ किए।

(उस खास तरकीब का तज़किरा, सफ्हा नंबर ७१ पर पढ़ें।)

* एक ख़ातून ने अपनी आप बीती बयान की कि मुझ पर बचपन से एक जिन का कब्ज़ा था मैं ने किसी के बताने पर दो अनमोल खज़ाने पढ़ने शुरू कर दिए जब से मैं ने वज़ाइफ़ पढ़ने शुरू किए, वह जिन सामने आ गया और मुझे इन वज़ाईफ को पढ़ने से रोकने लगा और मुझे तकलीफ़ दी, लिहाज़ा मैंने पढ़ना छोड़ दिया, मैं ने उन खातून से अर्ज़

किया कि उस जिन का इलाज यही है कि आखिर उसे तकलीफ पहुंची है तो उस ने पढ़ने से मना किया है लिहाज़ा उस का पढ़ना नहीं छोड़ना और उन्हें पढ़ने की खास तरकीब अर्ज़ की।

* मेरे एक मोहसिन ने अपने तजुरबात बयान किए कि मैं ने जहाँ इस के और फाइदे देखे वहीं इस का ख़ास फाइदा यह देखा कि जिन घरों में मियां बीवी के दर्मियान परेशानी और उलझनें रहती थीं आपस के झगड़े से घर में आग लगी हुई थी, मियाँ का रुख, मश्रिक की तरफ़ और बीवी का रुख मग़रिब की तरफ़, जब उन्होंने दो अनमोल खज़ाने पढ़ना शुरू किया उन का घर आतिश कदा से राहत कदा बन गया ऐसे एक घर का नहीं था बल्कि ऐसे बे शुमार घरों के मसाएल हल हुए।

* कराची के एक साहब ने अपने बच्चे के कमज़ोर ज़िहन होने का शिकवा किया वह अपने इकलौते बेटे के रौशन मुस्तकबिल के लिए पुर उम्मीद थे लेकिन उन का बेटा मुसलसल कोशिश के बावजूद तालीमी ज़िन्दगी में बहुत पीछे जा रहा था, मैं ने उन्हें अनमोल खज़ाना नंबर १, पढ़ कर मीठी मिसरी पर दम कर के खिलाने को अर्ज़ किया कि रोज़ाना इस को पढ़ा जाए, ऐसे तीन चिल्ले तक (यानी १२० दिन) किया जाए, उन साहब ने ऐसा किया, बच्चे की दिमागी कमज़ोरी जिहानत में बदल गई और बच्चा कुन्द ज़िहनी से निकल कर, तेज़ ज़िहनी की तरफ़ रवाँ दवाँ हो गया।

* एक प्राईवेट स्कूल के प्रिन्सिपल ने बताया कि अपने बच्चों को यह हिदायत कर

रखी है के असम्बली के बाद तमाम बड़ी क्लास के बच्चे दो अनमोल खज़ाने पढ़ें और फिर अपना तालीमी सिलेबस शुरू करें, प्रिन्सिपल साहब कहने लगे कि मेरा अर्से से यह मामूल और तरीक़ा है और मैं ने इस का तजुरबा किया है मेरे स्कूल का तालीमी प्रोग्रेस दीगर तमाम प्राईवेट स्कूलों से आगे है और बच्चों की ज़हनी सलाहियतों में बहुत इज़ाफ़ा हुआ है।

* मामूल की डाक में लाला मूसा से एक टीचर खातून ने अपनी मुश्किलात लिखीं, मैं ने उन्हें दो अनमोल खज़ाने पढ़ने का मश्वरा दिया, उन्हों ने जवाबी लिफ़ाफ़े पे अपना मुकम्मल पता और दस रुपये के टिकट लगा कर मुझ से दो अनमोल खज़ाने मुफ़्त मंगवा लिए और पढ़ना शुरू कर दिया उन का

मसअला दर असल यह था कि उन के ख़ाविन्द ने उन्हें छोढ़ कर किसी और ख़ातून से अपना तअल्लुक़ काएम कर लिया था हत्ता कि उस खातून का घर उजड़ गया और यह ख़ातून शराफत और इज़्ज़त से अपना घर बसाना चाहती थीं, जब उन्हों ने दो अनमोल खज़ाने का तज़किरा स्कूल में दीगर टीचर ख़वातीन से किया तो एक ख़ातून कहने लगीं कि मुझे मेरे भाई ने सऊदी अरब से एक वज़ीफ़ा भेजा है जो कि मुश्किलात में बारहा आज़मूदा और तजुरबा शुदा है, दूसरे दिन वह ख़ातून वह वज़ीफा लाईं, जब दोनों को मिलाया तो सऊदी अरब से भेजा हुआ वह वज़ीफ़ा भी दो अनमोल खज़ाने ही था उस खातून ने बताया कि इस वज़ीफ़े से बे शुमार लोगों की मुश्किलात दूर हो गईं और सऊदी

अरब में बे शुमार लोग पढ़ रहे हैं उन सब ने यह वज़ीफ़ा पाकिस्तान से मंगवाया था, जो ख़ास बात मेरे भाई ने मुझे कही वह यह कि जिस एतिमाद और भरोसे के साथ यह वज़ीफ़ा पढ़ा जाएगा, उसी के बक़दर फ़ाएदा होगा जितना एतिमाद मज़बूत होगा उतना फ़ाएदा जल्द होगा।

* जहानियां ज़िला खानेवाल में एक साहब जिन्हों ने अपना नाम शकील बताया, मिले वह दर असल दो अनमोल खज़ाने अर्से दराज़ से पढ़ रहे थे, उन के अन्दर सिर्फ मुलाकात का शौक था मिलते ही कहने लगे कि उन वज़ाईफ की वजह से मेरी रूहानी ज़िन्दगी में बहुत इन्किलाब आया है, नमाज़ में ध्यान, ज़िक्र में तवज्जोह, तक्वे का एहतिमाम और आमाल में रोज़ बरोज़

तरक्की शुरू हो गई, कहने लगे के मैं हैरान हूं यह इन्किलाबी चीज़ आप को कहां से मिली।

* एक सफ़र के दौरान झावरियाँ ज़िला सरगोधा में एक निहायत मुत्तकी, उमर रसीदा बुज़ुर्ग आलिम मिले, दो अनमोल खज़ाने का तज़किरा हुआ तो कहने लगे मेरा बेटा सारा दिन दीन का काम करता है और अल्लाह तआ़ला उसे पाल रहा है, रिज़्क मिल रहा है, घर चल रहा है, लोग उस से पूछते हैं, तुझे कहां से मिलता है कहता है जिस तवक्कुल, ऐतिमाद और भरोसे से इन वज़ाईफ को मैं पढ़ता हूं अगर तुम भी पढ़ना शुरू कर दो तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें भी ऐसा पाल कर दिखा देगा।

* एक जवान ने जो मुस्तक़िल दो अनमोल खज़ाने पढ़ता था, बयान किया है मुझे अपनी

तालीम के लिए डेन्मार्क जाना हुआ, मैं ने इस बात का तजुरबा किया कि जब भी मेरे इन्टरविव्ह या कोई ऐसा इम्तिहान कि जिस में बिल मुशाफा सवालात की नशिस्त हुई तो उस में मुझे किसी क़िस्म की परेशानी न हुई, दिली तसल्ली, इत्मिनान और खूब भरोसा रहा, बल्कि मैं ने निहायत भरोसे और ऐतिमाद से सवालात के जवाबात दिए और कामियाब हो गया।

✻ एक और साहब ने बयान किया कि यह मेरा मामूल है कि जब भी मुझे किसी के यहाँ ज़रूरत पेश आती है अपने से बड़े से काम होता है तो मैं यह वज़ीफ़ा पढ़ते जाता हूँ और अल्लाह तआला इस वज़ीफ़े की बरकत से मेरा काम बना देते हैं।

✻ यह बात तो बे शुमार लोगों ने बयान की

है कि दो अनमोल ख़ज़ाने की मक़बूलियत हम ने हस्पतालों में देखी और मरीज़ों को और मरीज़ों के रिश्तेदारों को पढ़ते हुए देखा और तजुरबा गवाह है कि जिन मरीज़ों ने इसे ऐहतिमाम से पढ़ा अल्लाह तआला ने जल्द से जल्द उन्हें शिफा अता कर दी।

* बहावलपूर सेंटल में एक कैदी के लिये मैं ने दो अनमोल खज़ाने भेजे कुछ अर्से के बाद उस का ख़त मौसूल हुआ कि मुझे और भेजें मैं ने एक बहुत बड़ा बंडल किसी ख़ास ज़रीये से भिजवा दिया, बात आई गई हो गई लेकिन कुछ ही अर्से के बाद चन्द खुतूत मिले और एक साहब बिल मुशाफा मिले और उन्हों ने जो बात बताई मैं खुद भी हैरान हुआ, कहने लगे, तवील क़ैद के दौरान मुझे पाकिस्तान की तीन जेलों में रहने का मौका

मिला, मैं जहाँ भी गया वहाँ दो अनमोल ख़ज़ाने पढ़े जा रहे थे, हत्ता कि डयूटी पर मौजूद पूलिस वाले जेल के अफ़्सरान भी दो अनमोल ख़ज़ाने पढ़ रहे थे।

* दो अनमोल ख़ज़ाने में एक बात जो सबसे ज़्यादा सामने आई है वह यह कि इस वज़ीफ़े को ख़वातीन ने बहुत ज़्यादा पढ़ा है और पढ़ रही हैं, ख़वातीन ने इस के जो फाएदे, वाक़िआत और मुशाहेदात बयान किए हैं उन में से सिर्फ़ दो (२) वाक़िआत बयान करता हूँ।

* एक खातून ने बताया कि मैं अर्से दराज़ से बीमार और लाचार रहने लगी, इलाज मुआलजे बहुत कराए लेकिन अफ़ाक़ा न हुआ किसी ने शक में डाल दिया कि आप पर जादू किया हुआ है मैं जादू को ज़्यादा मान्ती

नहीं थी कहीं से दो अनमोल खज़ाने मिल गए मैं ने उन को कसरत से पढ़ना शुरू कर दिया, पूरे ग्यारह माह पढ़े हैरत अंगेज़ बात यह हुई के वह लोग जिन्हों ने मुझ पर जादू किया था उन्हों ने ऐतिराफ़ किया कि हम ने वाक़ई आप पर जादू किया था, लेकिन जो आप ने हम पर किया वह हमारे जादू से कहीं बड़ा जादू था, मैं ने उन से अर्ज़ किया कि मैं ने तो आप पर कोई जादू नहीं किया बल्कि मैं ने दो अनमोल खज़ाने पढ़े, यह इन दो अनमोल खज़ानों की बरकत है कि आप का जादू आप पर उल्टा पड़ गया।

* एक खातून ने अपना वाकिआ बयान किया कि बाज़ औक़ात मेरे घर की चीज़ें उलट पलट जाती थीं, यानी रखती कहाँ और मिलती कहीं और से थी और बाज़

औकात कपड़ों की पेटी में आग लग जाती थी, बिस्तरों में आग लग जाती थी, मैंने दो अनमोल खज़ाने कसरत से पढ़ना शुरू कर दिए बल्कि घर के तमाम अफ़राद ने पढ़ पढ़ कर कमरों में फूंका और उन्हें पढ़ कर पानी पर दम किया और उस पानी को घरों की दीवार पर छिड़का, ऐसा करने से तमाम मसाएल हल हो गए और जिन्नात की कारिस्तानी ख़त्म हो गई।

दो अनमोल ख़ज़ाने की ख़ास तरकीब

कारईन ! अगर आप दो अनमोल ख़ज़ाने से ज़्यादा नफ़ा लेना चाहते हैं तो अव्वल आख़िर दरूद शरीफ़ ग्यारह, ग्यारह बार और अनमोल ख़ज़ाने नंबर १, इक्कीस बार सुबह

व शाम या दिन में सिर्फ़ एक बार किसी भी वक़्त २१ बार पढ़ें अनमोल ख़ज़ाना नंबर २ कम अज़ कम ३१३ बार और ज़्यादा से ज़्यादा हज़ारों की तादाद में निहायत कसरत से पढ़ें।

* एक साहब ने शिकवा किया कि उन का पड़ोसी उन्हें तंग करता है और नाजाइज़ तरीक़े से उन पर तरह तरह के इल्ज़ामात लगाता है। उन्हें दो अनमोल खज़ाने पढ़ने को दिए गए कुछ अर्से के बाद मिले और कहने लगे कि पड़ोसी की बद ज़ुबानी ख़त्म हो गई है और वह अब मुझ से मिलने में मुहब्बत से पेश आने लगा है।

* मेरे एक मिलने वाले मोटर बॅटरी का कारोबार करते थे घर के अफ़राद का बोझ ज़्यादा आमदनी कम, बा वजूद किफ़ायत

शिआरी के मसाएल रोज़ बरोज़ बढ़ते जा रहे थे। इन ही हालात में वह तरह तरह के वज़ाएफ और तावीज़ इस्तेमाल कर रहे थे कोई उन पर जादू बताता कोई तावीज़, कोई जिन्नात की कारिस्तानी बताता, आख़िर वह मिले तो मैंने उन्हें दो अनमोल खज़ाने पढ़ने को अर्ज़ किया, अल्लाह तआला की करम नवाज़ी हुई उन के हालात बेहतर हो गए।

* मेरे पास जहाँ जिस्मानी मरीज़ आते हैं वहाँ रूहानी मरीज़ भी बहुत आते हैं, दम तावीज़ वग़ैरा के लिए मेरा तजुरबा है जब भी मैंने ऐसे मरीज़ों को दो अनमोल खज़ाने पढ़ने को दिए और उन्हों ने निहायत तवज्जोह से पढ़ा अल्लाह तआला ने निहायत करम फर्माया क्यों कि सालहा साल से यह तजुरबा कर रहा हूँ कि इस वज़ीफ़े की बरकत से मैं ने

कई उजड़े हुए घर बस्ते देखे और बरबाद लोगों को आबाद होते देखा।

* मेरे पास रूहानी इलाज के लिए एक एम एन अे साहब आए मैं ने उन्हें दम किया कुछ तावीज़ दिए लेकिन साथ ही दो अनमोल खज़ाने पढ़ने को बा काइदगी से अर्ज़ किया मौसूफ़ चूंकि परेशान थे और हर तरफ़ से ठुकराए हुए थे उन्हों ने मेरी बात को तवज्जोह से लिया और पढ़ना शुरू कर दिया हालात रोज़ बरोज़ बेहतर होते चले गए।

* एक मेजर की उस के करनल से किसी बात पर तक्रार हो गई बात बढ़ती गई मेजर को अपनी नौकरी का ख़तरा हो गया मुझे मिले मैं ने अनमोल खज़ाना नंबर २ कसरत से पढ़ने को अर्ज़ किया उस ने निहायत तवज्जोह एतिमाद और ध्यान से पढ़ा

मुआमला हल हो गया और केस मेजर के हक़ में हो गया।

* हज़रत मौलाना तारिक़ जमील साहब दामत बरकातुहुमुल आलिया के एक शगिर्द ने जो अमरीका से पाकिस्तान दीनी तालीम के लिए आए हुए थे, दौराने मुलाक़ात पूछा कि कोई ऐसा वज़ीफ़ा बताएं कि जिस से पिछली ज़िन्दगी की कमज़ोरियाँ ख़त्म हों और मज़ीद दीनी ज़िन्दगी में आसानी और बरकत हो, तो मैं ने दो अनमोल खज़ाने में से सिर्फ़ एक इस्म पढ़ने को अर्ज़ किया तकरीबन ड़ेढ़ साल के बाद रहीम यार ख़ान में मिले हालांकि मैं भूल गया था खुद बताने लगे कि वह आप का बताया हुआ इस्म जिस की आप ने इजाज़त दी थी मैं ने पढ़ना शुरू किया तो मेरे साथ हैरत अंगेज़ हालात शुरू हो गए और मुझे महसूस

होना शुरू हो गया कि फलाँ शख़्स गुफ़्तुगू के दौरान झूट बोल रहा है और यह शख़्स अभी गुनाह कर के आया है, नमाज़ में नूर और कैफ़ियात वग़ैरा शुरू हो गईं फिर मैं ने पढ़ना छोड़ दिया कि कहीं मुझे मुसलमानों की कमी कोताही पर हिक़ारत न आ जाए, मैं ने उन्हें उस को पढ़ते रहने का मश्वरा दिया और उस की एक और तरकीब अर्ज़ की जिस से बैरूनी कैफ़ियात तो ज़ाहिर न होतीं लेकिन बातिन ख़ूब रौशन और चमकदार हो जाता।

ख़ज़ाना नंबर (२) की बरकत का तहय्युर ख़ेज़ वाक़िआक

एक सॉलेह शख़्स ने बयान किया कि उस ने एक शख़्स से रक़म उधार ली वह रक़म बा वजूद कोशिश के अदा न हो सकी और सूद

का बोझ बढ़ता रहा और रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा होता रहा, होते होते मुआमला यहाँ तक पहुंचा कि घर फरोख़्त हो गया, हम ने ख़ज़ाना नंबर २ को सवा लाख मर्तबा घर के तमाम अफ़राद ने मिल कर पढ़ा और कुछ फ़ाएदा हुआ मज़ीद सवा लाख दफ़ा पढ़ा कुल हम ने सात बार पढ़ा जितना ज़्यादा पढ़ते गऐ मसाएल सुलझते गए और हमारी मुश्किलात हल होती गईं, हम हैरान थे कि यह मुसीबत कैसे टल गई और अल्लाह तआला ने हमारे मसाएल हल कर दिए।

* एक घराना रिश्तों के न होने में उलझा हुआ था बहुत ज़्यादा कोशिश की लेकिन फ़ाएदा न हुआ तमाम घर वालों ने मिल कर यह सवा लाख मर्तबा पढ़ा (वाज़ेह रहे कि पढ़ने वाले मुख़्लिस और हमदर्द हों जिन में

ख़ुलूस, तवज्जोह ध्यान और पाकीज़गी हो, यह चीज़ ऐसे लोगों में नहीं हो सकती जिन को बाद में कुछ रक़म या खाने पीने की चीज़ें मिलने की ग़र्ज़ हो और न ही उस से कुछ फ़ाएदा होगा क्यों कि असल नफ़ा ख़ुलूस और लिल्लाहियत में है) अभी उन्हों ने सवा लाख के पांच निसाब ही पढ़े थे कि उन के रिश्तों के मसाएल हल हो गए।

* इसी तरह एक साहब दुबई अल अैन में रहते थे उन्हों ने मुलाज़मत के लिए बहुत कोशिश की लेकिन मसअला हल न हुआ बहुत ज़्यादा मकरूज़ होते गए तमाम दोस्त व अहबाब साथ छोड़ गए किसी क़िस्म की तरक़्क़ी नहीं हो रही थी जब से उन्हों ने अनमोल ख़ज़ाना नंबर २ को पढ़ना शुरू किया, सिर्फ़ तीन ही निसाब पूरे किए थे कि

अल्लाह तआला ने खज़ानए ग़ैब से उन के लिए बरकत और रहमत के दरवाज़े खोल दिए।

कारईन किराम ! तीन निसाब, पांच या ज़्यादा से ज़्यादा सात निसाब पढ़ने से अल्लाह तआला तमाम क़िस्म की मुश्किलात हल फ़र्मा देते हैं कुछ वक़्त और मुजाहेदात तो होता है लेकिन तमाम ज़िन्दगी के लिए मसाएल हल हो जाते हैं।

दो अनमोल ख़ज़ाने के चार मक़बूल अ़मल

बार बार के तजुरबात और लाखों लोगों के मुशाहिदात के बाद यह चार मक़बूल आमाल निहायत ज़ूद असर, रूहानी खज़ाइन से मामूर एक शाहकार, आफ़त

रसीदा और जान बलब मरीज़ों के लिए पैगामे शिफ़ा, हर बे रोज़गार और तंग दस्त फ़कीरों के लिए रहमते इलाही, जिन्नात से परेशान और जादू के मारों के लिए मुस्तनद इलाज, इस्मे आज़म के मुतलाशियों के लिए अजीब मोती, क़ैद से रिहाई के लिए उम्मीद अफ़्ज़ा बहार, दर बदर ठोकरें खाने वाले आजिज़ दर्द मान्दा बन्दों के लिए मरहम, जिन के रिश्तों में रुकावट हो या मुश्किल से मुश्किल चट्टान हो उन सब के लिए खुशखबरी है।

पहला अमल

जितना भी वज़ीफ़ा पढ़ा जाए वह तमाम पानी पर दम कर के उस पानी को जादू, जिन्नात, नज़रे बद और ना फ़र्मान औलाद को पिलाया जाए या चीनी पर दम कर के

किसी भी शकल में घोल कर पिलाई जाए दूध या पानी वगैरा में, इसी तरह घरेलू झगड़े में भी पिला सकते हैं, पढ़ कर दम करें और अपने मकान के चारों तरफ से हिफ़ाज़त और हिसार का तसव्वुर कर के फूंक मारें।

दूसरा अमल

ज़ाफरान खालिस किसी भी जड़ी बूटियों की दूकान से ले कर अरके गुलाब में भिगो दें यह एक तरह से रौशनाई बन जाएगी इस से दो अनमोल ख़ज़ाने, नंबर १ और खज़ाने नंबर २, पांच बार, सात बार, २१ बार लिखें! फिर उसे धो कर मरीज़, ना फर्मान औलाद, आपस की ना चाक़ी, घरेलू झगड़ों, नज़रे बद, जादू जिन्नात के लिए पिलाना निहायत ज़ूद असर है और हैरत अंगेज़ तरीक़े से इस का असर माना हुआ है और बे शुमार लोगों

के मामूलात में से है।

तीसरा अ़मल

इस किताबचे को तक़सीम करने से भी मुश्किलात परेशानियाँ और जिस्मानी रूहानी घरेलू मसाएल हल होते हैं क्यों कि जितने लोग पढ़ेंगे उतना उस शख़्स का सदक़ा जारिया होगा और ना मालूम कोई शख़्स ऐसी ज़ारी और यक़ीन से पढ़े कि उस का अमल कुबूल हो और जो शख़्स उस तक पहुंचाने का ज़रिया बना है अल्लाह तआला उस का पढ़ा अमल कुबूल फ़र्मा कर उस की तक्लीफ़ें चाहे रूहानी हों या जिस्मानी, दूर कर दे यह तरीक़ा वैसे भी एक मसनून अमल को आम करने का ज़रिया है और मसनून अमल को आम करना ख़ूद एक अज़ीम अज्र का काम है इस की तादाद मुख़्तलिफ़ है, ३१३ अदद,

७८६ अदद, ११०० अदद, २१०० अदद, ३३०० अदद, (इस तादाद से ज़्यादा भी कर सकते हैं) इसे ले कर हस्पतालों, जेलों, रेल गाड़ियों, बड़ी दुकानों सुपर स्टोरों और नमाज़े जुमा के बाद बड़ी मसाजिद के नमाज़ियों में तक़्सीम करें, वाज़ेह रहे कि इस को एहतियात और क़द्र व इक्राम से तक़्सीम करें कि कहीं इस की बे क़द्री न हो। इस किताबचे को छोटे बड़े शहरों में तक़्सीम कर सकते हैं और ऐसी जगहों पर पहुंचाने से फाएदा ज़्यादा होगा जहाँ लोगों को यह मयस्सर नहीं। इस को ख़ुद छपवा सकते हैं वरना महमूद एण्ड कंपनी, मुंबई-०३ का पता किताबचे पर दर्ज है वहाँ से लागत यानी बग़ैर नफ़े के छपे छपाए मिल सकते हैं, वाज़ेह रहे कि खुद छपवाते हुए इस में किसी क़िस्म की

तब्दीली न करें।

चौथा अ़मल

अनमोल ख़ज़ाना नंबर १, सिर्फ एक बार और खज़ाना नंबर २ सात बार या २१ बार काली या नीली रौशनाई वाले क़लम से नमाज़े फ़ज्र के बाद लिख कर रोटी के बराबर आटा गून्ध कर उस में लपेट कर किसी दर्या, नहर, चश्मा, कुंवा, बड़ा तालाब या समुन्दर में डाल दें लिखते हुए ऐसे लिखें कि आप अल्लाह तआ़ला को दरख़्वास्त लिख रहे हैं और अपने तमाम मसाएल मुश्किलात ज़हन में रख कर लिखें और डालते हुए अपनी जो भी मुश्किल हो ज़िहन में रख कर डालें, जैसा कि हज़रत उमर (र.ज़ि.) ने दरयाए नील में ख़त लिख कर डलवाया था, यह कुल सात यौम, २१ यौम, ४० यौम लिख कर बिला नाग़ा डालें नाग़ा हो जाए तो फिर से यह

अमल शुरू करें, यह अमल मुश्किलात परेशानियों और तमाम क़िस्म के मसाएल के लिए आज़मूदा राज़ है, एक अहम बात याद रखें कि जब कोई वज़ीफ़ा शुरू करें तो मुस्तक़िल मिज़ाजी और पाबन्दी ज़रूरी है। एक छोड़ कर दूसरा और दूसरा छोड़ कर तीसरा करना भी नफ़ा मन्द साबित नहीं होगा बल्कि नुक़्सान होता देखा है। कसरत से दरूद पढ़ने वाले के लिए दुनिया और आख़िरत के तमाम फ़िक्रों से किफ़ायत खुद अल्लाह जल्ले शानुहू फर्माते हैं। एक मुख़्तसर लेकिन बहुत जामे दरूद, जिसे अपने खुसूसी व उमूमी अहबाब की ख़िदमत में अर्ज़ करता रहता हूं।

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ

सल्लल्लाहु अ़ला मुहम्मदिन।

दरूदे हाज़ा के मुतअल्लिक़ : इमाम

अब्दुल वह्हाब शैअ़रानी (र.ह.) ने बयान किया कि हुज़ूर नबी करीम (स.अ.व.) ने फ़र्माया कि जिस ने यह दरूद पढ़ा तो उस ने अल्लाह तआला की रहमत के ७० दरवाज़े अपनी ज़ात पर खोल दिए और अल्लाह तआला उस की मुहब्बत लोगों के दिलों में डाल देता है, पस उस शख़्स से वही आदमी बुग़्ज़ रखेगा जिस के दिल में निफ़ाक़ होगा, इमाम शैअ़रानी (र.ह.) फ़र्माते हैं कि हमारे शेख सय्यद अली खव्वास (र.ह.) ने फ़र्माया कि इस हदीस से पहले हुज़ूर नबी करीम (स.अ.व.) का वह इर्शादे गिरामी भी है जिस में आप (स.अ.व.) ने फ़र्माया कि तुम में से मेरे सब से ज़्यादा क़रीब वह होगा जिस ने जब भी मेरा ज़िक्र किया तो मुझ पर दुरूद पढ़ा। (ब हवाला शेख मुहम्मद यूसुफ बिन

इस्माईल नभानी "अफ़ज़लुस्सलाति अला सय्यिदिस्सादाति" (अरबी) बैरूत की छपी हुई १३०९ हिजरी सफ़्हा २३७)

★★★

इस्तिदआ : इन्सानी ताक़त और बिसात में जो कुछ है उस के मुताबिक़ और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल व करम से हमारी कंपनी ने हर मुमकिन कोशिश की है कि इस किताब में किसी क़िस्म की कोई ग़लती न रह जाए फिर भी इन्सान ख़ता का पुतला है अगर दौराने तिलावत कोई ग़लती नज़र आए तो महरबानी करके हमें इत्तिला करें ताकि आइन्दा इशाअत में इस की तस्हीह की जा सके। (इदारा)

जज़ाकल्लाह (प्रकाशक)

यह अनमोल वज़ीफ़ा

* रोज़गार की मुश्किलात
* तरक़्क़ी में रुकावट
* घरेलू नाचाक़ी
* औलाद की ना फ़रमानी
* जादू और जिन्नात के असरात
* कारोबार में रुकावट
* नज़रे बद के असरात
* हासिदीन और दुश्मनों के शर
* रूहानी तरक़्क़ी ला इलाज मरीज़ों के

लिए बहुत आज़मूदा है।

दुआगो और तालिबे दुआ !

प्रकाशक

सय्यद महमूद

महमूद एण्ड कम्पनी